त्रिलोचन महापात्र, पीएच.डी.
एफ एन ए, एफ एन ए एस सी, एफ एन ए ए एस
सचिव एवं महानिदेशक
TRILOCHAN MOHAPATRA, Ph.D.
FNA, FNASc, FNAAS
SECRETARY & DIRECTOR GENERAL

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली 110 001
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 001
Tel.: 23382629; 23386711 Fax: 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

अपील

हिन्दी दिवस की सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ और व्यापक बनाने में भाषा सदैव से एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी रही है। भाषा केवल बोलचाल और काम-काज का ही माध्यम नहीं है, बल्कि भाषा भाषियों के सभी तरह के सांस्कृतिक क्रियाकलाप का माध्यम भी है। भाषा ही समाज को बिखरने से बचाती है, उसे एक सूत्र में बांधती है।

भारत में हिन्दी भाषा और साहित्य की एक समृद्ध व गौरवशाली परम्परा रही है । हिन्दी भाषा का इतिहास बहुत ही पुराना है। देश में आम-बोल चाल की भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग काफी बढ़ा है। देश के किसी भी क्षेत्र में जाएं तो हम पाते हैं कि हिन्दी समझने वाले प्रत्येक स्थान पर मौजूद हैं। सरकारी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है लेकिन इस पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए यह जरूरी है कि विभागों में सरकारी कार्य मूल रूप से हिन्दी में हो।

हमें अपनी भाषा में कार्य करने पर संतोष होना चाहिए। विज्ञान जैसे जटिल विषय को हम सरल भाषा में लिखने का प्रयास करें तो आम जनता तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं। राजभाषा हिन्दी का प्रयोग लोक हित में है, संवैधानिक आवश्यकता है, प्रत्येक कार्मिक का समान दायित्व है। हमें अपने दैनिक सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग स्वेच्छा एवं स्वाभाविक रूप से करना चाहिए और रोजमर्रा के कार्यों जैसे हस्ताक्षर, ई-मेल, एसएमएस, बधाई संदेश, छोटे-छोटे पत्रों आदि को लिखने के लिए स्वप्रेरणा से हिन्दी का ही प्रयोग करना चाहिए। उच्च अधिकारी हिन्दी में स्वयं लिखे कर्मचारियों की नियुक्ति के समय उनके हिन्दी ज्ञान पर भी ध्यान देना चाहिए और नए कर्मचारियों को शुरू से ही हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

मैं परिषद व इसके प्रत्येक संस्थान/केन्द्र के विभागाध्यक्षों से यह अपील करता हूं कि वे अपने-अपने विभाग के सामान्य कामकाज मूल रूप से हिन्दी में ही करें। कार्यालयों में आयोजित होने वाली कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, सम्मेलनों तथा समारोहों का माध्यम हिन्दी हो। इसमें पूरे कार्यालय को भागीदार बनाया जाए। आज तकनीक का युग है। उसी के अनुरूप कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए आज सभी प्रकार के साफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से अपना पूरा काम बहुत ही आसानी से हिन्दी में किया जा सकता है। मैं यह निश्चित रूप से कह सकता हूं कि हिन्दी में वह क्षमता है कि वह विश्व पटल पर विराजमान हो। हिन्दी को विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए हमें और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। इसके लिए बिना अनुवाद का सहारा लिए हम अपना दिन-प्रतिदिन का सरकारी कामकाज हिन्दी में करें, ताकि वैज्ञानिक उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने में सफल हो सकें।

आइए, इस अवसर पर हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि आज से ही हम अपना सभी कार्य हिन्दी में ही करेंगे।

मैं, परिषद व इसके संस्थानों में हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित किए जाने वाले समारोहों की सफलता की कामना करता हूं।

दि. 5-9-2017

ति. महापात्र
(त्रिलोचन महापात्र)